शैशवावस्था (Infancy) – जन्म – 5/6 वर्ष

- इस अवस्था को भाषा सिखने की सर्वोत्तम अवस्था कहते हैं।
- इस अवस्था में दोहराने एवं अनुकरण करने की तीव्रता पाई जाती है।
- इस अवस्था को भावी जीवन की आधारशिला के रूप में देखा जाता है।
- इस अवस्था में व्यवहार पूरी तरह से प्रतियों से जुड़ा होता है।
- इस अवस्था को बालक/बालिका का "निर्माण काल" कहा जाता है।
- इस अवस्था को "संवेग अवस्था" कहते हैं।
  → {क्रोध, प्रेम, प्रसन्नता, घृणा आदि।}

सिगमण्ड फ्रायड के अनुसार,

बच्चा या मानव को जो कुछ भी बनना होता है, वह अपनी प्रारंभिक पाँच वर्षों की आयु में ही बन जाता है।

ऐडलर के अनुसार,

बालक/बालिका के जन्म के कुछ माह बाद ही यह निश्चित किया जा सकता है, कि जीवन में इसका क्या स्थान है।

10/02/2023

शैशवावस्था के महत्वपूर्ण तथ्य –

(1.) शारीरिक वृद्धि में तीव्रता।

(2.) मानसिक विकास में तीव्रता।

(3.) सीखने की प्रक्रिया में तीव्रता।

(4.) कल्पना की सजीवता।

(5.) दूसरों पर निर्भरता।

(6.) आत्मप्रेम की भावना।

(7.) नैतिकता का अभाव।

(8.) मूल प्रवृत्तियों पर आधारित व्यवहार।

(9.) सामाजिकता की ओर अग्रसर।

(10.) रुचि या अरुचि का प्रदर्शन।

(11.) संवेगों (Emotions) का प्रदर्शन।

(12.) दोहराने प्रवृत्ति।

(13.) जिज्ञासा की प्रधानता।

(14.) अनुकरण कर सीखने की प्रवृत्ति।

(15.) खेल प्रवृत्ति।

Date 10/02/2023.

शैशवावस्था में शारीरिक विकास –

- जन्म – 3 वर्ष तक बच्चों का शारीरिक विकास तेज गति से होता है।
- प्रथम वर्ष में शिशुओं की हड्डियों, मांसपेशियों एवं अन्य अंगों का इतना विकास हो जाता है, कि वे खड़े हो सकें।
- दाँत का निकलना और पुट्ठे मजबूत हो जाना।
- ज्ञानेन्द्रियाँ एवं कर्मेन्द्रियाँ क्रियाशील हो जाती हैं।
-

शारीरिक विकास
- → शैशवावस्था ~ 270 हड्डियाँ
- → बाल्यावस्था ~ 350 हड्डियाँ
- → किशोरावस्था ~ 206 हड्डियाँ

शिशु के सिर का वजन = 4–5 पाउण्ड (Pound).
(1800 gm / 1.8 kg)

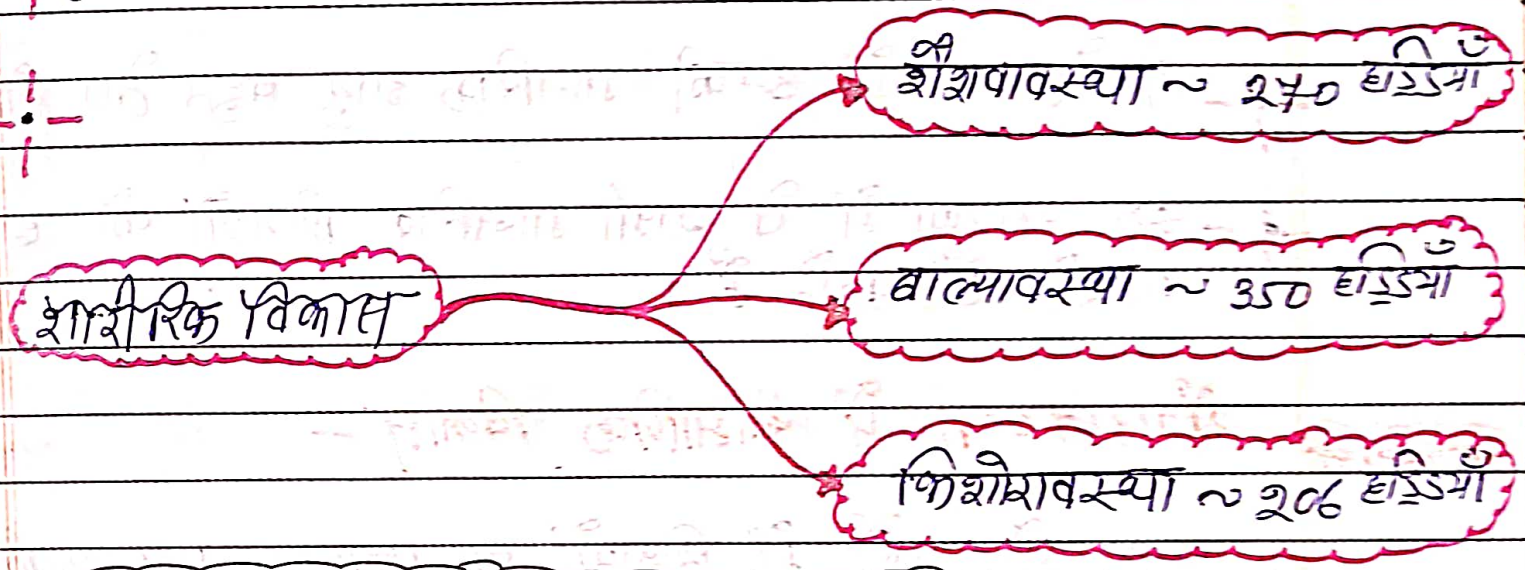

1 pound = 450 gm.

10/02/2022.

शैशवावस्था में मानसिक विकास –

- इस अवस्था में बच्चे का मस्तिष्क सरल से जटिल की ओर विकसित होता है। उनकी कोशिकाएँ कोश बढ़ते हैं, बँटते हैं।
- प्रथम तीन वर्षों तक बालक/बालिका का मानसिक विकास तीव्र गति से होता है।
- प्रथम दो वर्षों में शिशु पर्यावरण से सम्बंधित चीज़ें समझने लगते हैं। जैसे – पेड़, पक्षी, पशु आदि।
- तीसरे वर्ष में उनकी मानसिक आयु बहुत तेज होती है।
- इस अवस्था में वे सभी मानसिक क्रियाओं को ध्यान से समझते हैं, बूझते हैं।

शैशवावस्था में सामाजिक विकास –

- प्रथम दो वर्षों में शिशुओं का व्यवहार मूल प्रवृत्तियों से जुड़ा होता है।
- वे स्वकेन्द्रित होते हैं। (अपने सुख को ही सुख समझते हैं)
- दो वर्ष की आयु पूरी करने पर वे अपने माता-पिता को भी प्रसन्न देखना चाहते हैं।
- सम आयु के शिशुओं से ईर्ष्या करते हैं।
- वे अपना खिलौना किसी को देना पसंद नहीं करते हैं
- तीन वर्ष की आयु पूरी करते-करते शिशु दूसरे शिशुओं के प्रति प्रेम प्रदर्शित करने लगते हैं। उनके साथ खेलना, ख

Date 11/02/2023

पसंद करते हैं। उनके सुख-दुःख में शामिल होने लगते हैं।

- 6 वर्ष की आयु पूरी करते-करते बच्चे अपने समाज की भाषा सिख जाते हैं। इस अवस्था में वे "परानुभूति" करने लगते हैं।

- इस अवस्था में बच्चे समाज की परंपराओं को भी मानने लगते हैं।

शैशवावस्था में संवेगात्मक विकास -

- जन्म के समय शिशु केवल उत्तेजना का अनुभव करते हैं।

- एक माह के होते-होते वह सुख-दुःख का अनुभव करने लगते हैं।

- प्रथम वर्ष में उनमें प्रेम, क्रोध एवं भय के संवेग विकसित हो जाते हैं।

- एक वर्ष का शिशु यह चाहने लगता है, कि उससे सम्बंधित सभी लोग उससे प्रेम करें।

- यदि उनके माता-पिता किसी अन्य बच्चे को गोद में लेकर प्रेम जताने लगते हैं, तो वह उस बच्चे से ईर्ष्या करने लगते हैं।

- यदि कोई बच्चे के मार्ग में बाधा डालता है, तो वह क्रोध (संवेग) करने लगते हैं।

- तीन वर्ष की आयु पूरी करते-करते शिशुओं में लगभग सभी प्रमुख संवेगों का विकास हो जाता है।

मैक्डूगल के चौदह (14) संवेग —

मूल प्रवृत्ति	संवेग
(1.) पलायन	भय
(2.) युयुत्सा (Combatt)	क्रोध
(3.) निवृत्ति (Repulsion)	घृणा
(4.) पुत्र कामना	वात्सल्य / प्रेम
(5.) शरणागत	करुणा / दया / विषाद
(6.) काम प्रवृत्ति (Sex)	कामुकता (Lust)
(7.) जिज्ञासा	आश्चर्य
(8.) दीनता (Submission)	आत्महीनता
(9.) आत्मगौरव	आत्माभिमान
(10.) सामुहिकता	अकेलापन / एकाकीपन
(11.) भोजनान्वेषण (food seeking)	भूख (apetite)
(12.) संग्रह	अधिकार / स्वामित्व भाव
(13.) रचना	संरचनात्मक भावना
(14.) हास्य (Laughter)	मनोविनोद / आमोद (Amusement)